International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 19-02-2023, Accepted: 08-03-2023, Published: 23-03-2023
Volume 9, Issue 2, 2023, Page No. 14-15

शोध लेख–नारी संघर्ष, समस्या और सामाजिक कुरीतियों का आईना 'सेवासदन'

कुमारी ममता सिंह
शोध छात्रा, कलिंगा विद्यालय, रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत

सारांश
''सेवासदन'' उपन्यास में मुंशी प्रेमचंद ने नारी जीवन की समस्याओं के साथ कई समस्याओं को उभारा है। उन्होंने अपने साहित्य में नारी को केंद्र में रखकर उसके जीवन के संघर्ष, समस्याओं के साथ अन्य कई पहलुओं को पाठकों के सामने रखने की कोशिश की है। लेखन एक ऐसी कला है जिसके माध्यम से हम समाज को सच का आईना दिखा सकते है और 'सेवासदन' के माध्यम से प्रेमचंद ने, समाज की कुरीतियों को पाठको के सामने लाने की कोशिश की है। उन्होंने दिखाया है कि किस तरह मध्यवर्गीय नारी समस्याओं के घेरे में घिर कर वो कर बैठती है जो उसने सोचा ना था। 'सेवासदन' की नायिका सुमन एक सीधी–साधी स्त्री होती है जो परिस्थियों का शिकार होकर वेश्यावृति के दलदल में फंस जाती है और जब इस दलदल से निकलना चाहती है तो सामाजिक कुरीतियाँ उसे उस दलदल में और धँसा देती है।

मूल शब्दः नारी संघर्ष, समस्या, समाजिक कुरीतियाँ

प्रेमचंद की सभी रचनाएं सामाजिक सरोकारों से ओतप्रोत हैं। सेवासदन उनका एक शताब्दी के लम्बे अंतराल के बावजूद यह आज भी इसलिए प्रासंगिक है, क्योंकि इसकी नायिका का जीवन नारी जीवन की समस्याओं के साथ–साथ धर्माचार्यों के ढोंग, पाखंड, दोहरे चरित्र और समाज में व्याप्त दहेज–प्रथा, बेमेल विवाह जैसी सामाजिक कुरीतियों पर कटाक्ष करता नजर आता है। साथ ही इसमें वेश्या–जीवन और मध्यम वर्ग की आर्थिक–सामाजिक समस्याओं को भी प्रमुखता के साथ चित्रित किया है। प्रेमचंद ने अपने साहित्यिक जीवन की शुरुआत धनपत राय के नाम से उर्दू उपन्यास से की थी। 'बाजारे–हुस्न' (1916) उनका उर्दू में लिखा उपन्यास है, जिसे 1919 में उन्होंने 'सेवासदन' के नाम से हिंदी में भी प्रकाशित कराया। सेवासदन में प्रेमचंद ने धर्माचार्यों, सुधारकों के ढोंग पाखंड, दहेज प्रथा, वेमेल विवाह, चरित्रहीनता, वेश्यावृति, खोलले मान सम्मान का वर्णन जगह जगह मिलता है. प्रेमचंद ने इस उपन्यास में इस तथ्य को उजागर किया है कि घृणा की पात्र सुमन नहीं बल्कि हमारा समाज है जो उसे वेश्या बनने को बाध्य करता है. दारोगा कृ ष्णचंद्र उदार और सज्जन पुरुष थे. उनके घर में उनके सिवा तीन और प्राणी थे उनकी पत्नी और दो बेटियाँ. वो अपनी बेटियों को जान से ज्यादा प्यार करते थे. उनकी हर ज़रुरत को वो पूरा करते थे।7 उनकी पत्नी गंगाजली चतुर स्त्री थी वो हमेशा उन्हें समझाया करती थी कि आप इस तरह इन पर पैसा खर्च मत कीजिए। इनकी शादी के लिए भी बचा कर रखा कीजिए लेकिन दारोगा जी को बेटियों के आगे कुछ ना सुझता। प्रेमचंद ने उकनी बड़ी बेटी सुमन के स्वाभाव का वर्णन इस प्रकार किया है "समुन, सुन्दर, चंचल और अभिमानी थी. उनकी छोटी बेटी शान्ता गम्भीर, भोली और सुशील थी. सुमन हमेशा दूसरों से बढ़ चढ़ कर रहना चाहती थी। बाज़ार से जब दोनों बहनों के लिए एक ही प्रकार की साड़ियाँ आती तो सुमन मुँह फुला लेती थी।8 सुमन के पिता अपनी दोनों बेटियों से प्यार करते थे। वो दोनों की हर ज़रुरत को पूरा करते थे। जब सुमन की विवाह की बात चली तो लड़के वाले की तरफ से दहेज़ का माँग सुनकर उनकी हिम्मत टूट गई। वो दहेज़ की रकम देने में सक्षम नहीं थे। दहेज़ समाज में एक ऐसा रोग था जो दिन पर दिन बढ़ता जा रहा था द्य दहेज़ के कारण एक ईमानदार पिता को अपना ईमान बेचना पड़ा, क्योंकि शिक्षित लोगों को उनसे सहानुभूति तो थी लेकिन, वो कोई ना कोई ऐसा बहाना कर देते कि दारोगा जी के पास कोई जवाब नहीं होता। एक सज्जन ने तो इतना कह दिया कि "महाशय, मैं स्वयं इस कुप्रथा का जानी दुश्मन हूँ, लेकिन क्या करू, अभी पिछले साल लड़की का विवाह किया, दो हज़ार रुपये केवल दहेज देनेपड़े, दो हज़ार और खाने–पीने में खर्च करने पड़े, आप ही कहिए, यह कमी कैसे पूरी हो"। दूसरे महाशय उनसे भी अधिक नीतिकुशल थे. "बोले–दारोगाजी, मैने अपने लड़के को पाला है, उसकी पढ़ाई पर बहुत रुपये खर्च किए हैं। आपकी लड़की को इससे उतना ही लाभ होगा, जितना मेरे लड़के का। तो आप ही न्याय कीजिए की यह सारा भार मैं अकेले कैसे उठा सकता हूँ 9"। कोई भी बिना दहेज के उनकी बेटी सुमन से शादी करने को तैयार ना था इस तरह दहेज़ के रकम को पूरा करने के चक्कर में रिश्वत लेनी पड़ी और भेद खुल जाने पर जेल जाना पड़ा।

इन सब के बीच सुमन का विवाह गरीब गजाधर प्रसाद से कर दिया जाता है। बेमेल विवाह और गरीबी के कारण दोनों पति पत्नी में लड़ाई–झगड़े होने लगते है। कभी अकेले पन और आपस की लड़ाई से तंग आकर सुमन पड़ोस की औरतों के साथ बैठ कर गप्प शप करना शुरु कर देती है जो गजाधर को बिल्कुल पसंद नहीं। एक रात अपनी सहेली सुभद्रा के घर आने में देरी होने के कारण गजाधर ने उसे घर से निकाल दिया उसके लाख कोशिश करने पर भी वो दरवाज़ा नहीं खोला। उसका नाम उसके पति वकील पद्म सिंह के साथ जोड़कर उस पर लांछन लगाने लगा और उसके चरित्र पर सवाल उठाने लगा। गाजधर ने लांछयुक्त शब्दों में कहा–अच्छा, तो अब वकील साहब से मन मिला है. ह कहो फिर भला, मजूर की परवाह क्यों होनो लगी।35

सुमन को लांछन सहन ना हुए। उसने क्रोध में गजाधर से कहा जो कहना है मुझे कहलो वकील साहब पर लांछन मत लगाओं वह भले मानस है द्य इस पर गजाधर ने कहा–चल छोकरी, मुझे ना चरा, ऐसे–ऐसे कितने भले मानस को देख चुका हूं। वह देवता हैं, उन्हीं के पास जा। यह झोपड़ी तेरे रहने योग्य नहीं है। तेरे हौसले बढ़ रहे हैं। अब तेरा गुजर यहां ना होगा। 36

गजाधर जब सुमन को घर सो बाहर निकाल देता है तो सुमन कुछ देर सड़क पर खड़ी सोचती रही कहां जाऊं। सुभद्रा के यहां भी इतनी रात को नहीं। लेकिन फिर भी सहारे के लिए वह सवेरे–सवेरे वहाँ पहुँच जाती है और सुभद्रा को वह सब बता देती

है। 39 जब पधमसिंह को पता चलता है कि गजाधर ने उसे निकाल दिया है तो वह चिंतित होते है, लेकिन बात तब बिगड़ जाती है जब सुमन के घर में रहने से बदनामी होती है। अंत में सुमन के पास कहीं भी रहने के लिए जगह नहीं रहती। 40 तभी अचानक भोली उसे दयनीय अवस्था में देख लेती है और उसे इशारा करके वह अपने पास बुलाती है लेकिन सुमन को तब भी डर लगता है कि कहीं गजाधर उसे देख ना ले भोली ने पूछा–आज यह सन्दूकची लिए कहाँ से आ रही थी ?

सुमन–यह रामकहानी फिर कहूँगी। इस समय तुम मेरे ऊपर इतनी कृपा करोा कि मेरे लिए कहीं अलग एक छोटा–सा मकान ठीक करा दो। मैं उसमें रहना चाहती हूँ।

भोली ने विस्मित होकर कहा–यह क्यों, क्या शौहर से लड़ाई हो गयी है ?

सुमन–नहीं, लड़ाई की क्या बात है ? अपना जी ही तो है।

भोली–जरा मेरे सामने तो ताको। हाँ, चेहरा साफ कह रहा है। क्या बात हुई ? 41

सुमन–सच कहती हूँ, कोई बात नहीं। अगर अपने रहने से किसी को कोई तकलीफ हो तो क्यों रहे ?

भोली–अरे तो मुझसे साफ–साफ कहती क्यों नहीं, किस बात पर बिगड़े थे ?

सुमन–बिगड़ने की कोई बात नहीं है। जब बिगड़ ही गये तो क्या रह गया ?'

सुमन को मजबूरी में भोली के यहाँ शरण लेनी पड़ती है। न चाहकर भी उसे वहाँ जाना पड़ता है, जिसके कारण वह इस परिस्थिति में निरन्तर फंसती जाती है। 42

प्रेमचन्द ने 'सेवासदन' उपन्यास में सुमन की उन परिस्थितियों व समस्याओं पर प्रकाश डाला है जिसके कारण वह कैसे वेश्यावृत्ति की दलदल में फंसती है। ठीक उसी प्रकार, समाज में रह रही स्त्रियों, जो वेश्या बनती हैं, उसके पीछे भी उनकी कोई समस्या या मजबूरी, लाचारी होती है। सुमन जब भोली के यहाँ रहने लगती है तो वहाँ तौर–तरीकों व चमक–दमक से आकर्षित हो जाती है और थोड़ा बहुत भोली, सुमन को बातों–बातों में फंसा देती है। उसकी खूबसूरती का बखान करती है। सुमन को गाना सिखाती है। धीरे–धीरे समय व्यतीत होते–होते वह सुमन से सुमनबाई बन जाती है। सुमन के रूप के सौन्दर्य के बखान की सीमा नहीं रहती। चारों तरफ सुमन की चर्चा होने लगी। सुमन धीरे–धीरे इस दलदल में फँसती जाती है।

समाज में नारी के सामने तरह–तरह की समस्याएं आती है। चाहे वो समस्या कोई भी क्यूं ना हो उसे समस्या के आगे झुकना पड़ता है जैसे सुमन को झुकना पड़ा। अगर सुमन पढ़ी लिखी होती तो कभी भी वेश्यावृति के दलदल में ना फंसती। वह शिक्षित होती तो हर समस्या का हल ढूंढ सकती थी अपना निर्णय स्वंय ले सकती थी। उसे भोली बाई का सहारा नहीं लेता पड़ता और वेश्या का जीवन नहीं भोगना पड़ता।

प्रेमचंद ने 'सेवासदन' में दिखाया है कि उस समय समाज में किस तरह व्यापत कुरीतियाँ थी। जिसका शिकार उस समाज में रहने वाली नारी को भोगना पड़ता था। दहेज की समस्या के कारण सुमन का विवाह एक ऐसे आदमी से कर दिया जाता है जो उसके पूरे जीवन को बर्बाद कर देता है। शंका की समस्या उसका जीना और मुश्किल कर देती है। शंका के कारण उसका पति उसे घर से निकाल देता है और वह वेश्यावृत के दलदल में फँस जाती है। जिसके छींटे उसके परिवार और बहन के जीवन पर पड़ने लगते है। जिस कारण वह विधवा आश्रम में जाने को तैयार हो जाती है और वेश्या के श्राप से मुक्त होने का ठान लेती है।

निष्कर्ष

'सेवासदन' में प्रेमचंद दिखाते है कि नारी जीवन की समस्याओं के साथ–साथ समाज के धर्माचार्यों, मठाधीशों, धनपतियों, सुधारकों के आडंबर, दंभ, ढोंग, पाखंड, चरित्रहीनता, दहेज–प्रथा, बेमेल विवाह, पुलिस की घूसखोरी, वेश्यागमन, मनुष्य के दोहरे चरित्र, साम्प्रदायिक द्वेष आदि हमारी सामाजिक कुरीतियाँ स्त्रियों के जीवन को कठिन बना देती है। नारी जीनव आरम्भ से लेकर अंत तक समस्याओं से भरा रहा है। पग–पग पर समस्या जटिल रूपले खड़ी रही है। कथाकार प्रेमचंद ने नारी जीवन को बहुत निकट से देखा है. उसके जीवन की जटिलताओं को परखा है। उनका मानना है कि नारी जीवन की समस्याओं को सुलझाने के लिए जरुरी है कि स्त्रियों को भी समाज में पुरुषों के समान अधिकार प्राप्त हो।

संदर्भ सूची

1. आजकल पत्रिका–सेवासदन सौ वर्ष बाद भी प्रासंगिक आजकल पत्रिका–
2. हिंदीकुंज.कॉम–लेख–सामाजिक विकृतियों के घृणित विवरणों से भरा उपन्यास सेवासदन
3. सहचर त्रैमासिक ई–पत्रिका–लेख–मध्यवर्गीय नारी, समाज और सेवासदन–मनीता ठाकुर टी. एन.ओझा
4. सेवासदन पृष्ट संख्या– 7
5. सेवासदन पृष्ठ संख्या –8
6. सेवासदन–पृष्ठ संख्या –9
7. सेवासदन–पृष्ट संक्या–35
8. सेवासदन–पृष्ट संख्या–39
9. सेवासदन–पृष्ट संख्या–40
10. सेवासदन–पृष्ट संख्या–41
11. सेवासदन–पृष्ट संख्या–42